मंगल मूरति मारुत नंदन, सकल अमंगल मूल निंकदन ।
पवनतनय संतन हितकारी, हृदय बिराजत अवध बिहारी ॥१॥

मातु पिता गुरु गणपति सारद, शिव समेत शंभु शुक नारद ।
चरन कमल बंदौं सब काहु, देहु रामपद नेहु निबाहु ॥२॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।
बन्दउं राम लखन वैदेही, यह तुलसी के परम सनेही ॥३॥